महिला जन अधिकार समिति

वार्षिक रिपोर्ट 2020–21

महिला जन अधिकार समिति

वार्षिक रिपोर्ट 2020–21

महिला जन अधिकार समिति

वार्षिक रिपोर्ट 2020–21

महिला जन अधिकार समिति के बारे में

महिला जन अधिकार समिति एक नारीवादी संस्था है

जो समाज के हाशियाई समूहों और

खासकर महिलाओं के लिए

सम्मान,सुरक्षा और सशक्तता को

क्रियान्वित करने के लिए महिलाओं के नेतृत्व –

खासकर युवा नेतृत्व को बढावा देने के लिए

हरसंभव प्रयास करती है।

समिति हमारे देश के संविधान की मूल प्रस्तावना; और

मानव अधिकारों के अंतर्राष्ट्रीय–सार्वभौम घोषणा के

अन्तर्निहित दायरे के प्रति प्रतिबद्ध और जवाबदेह

आमुख

महिला जन अधिकार समिति के दो दशक पूरे होने के अवसर पर कार्यकारिणी सभा और कार्यकारी टीम की ओर संस्था से जुडें सभी मित्रों, साथी संस्थाओं, सहयोगियों, स्टेकहोल्डर्स का आभार व्यक्त करती हूॅ। आप सभी के सहयोग, एकजुटता और स्नेह से लम्बा सफर तय कर पाये हैं।

संस्था वार्षिक रिपोर्ट 2020–2021 पेश करते हुए मुझे बेहद खुशी है। समिति कार्यकारिणी की ओर से मै समिति से जुडी पूरी टीम को बधाई देती हूॅ जिन्होंने कठिन परिश्रम करके संस्था के प्रोजेकट्स को पूरी मेहनत के साथ कार्यक्षेत्र में संचालित किया। वैश्विक महामारी कोविड19 के कारण पूरा वर्ष चुनौतीपूर्ण रहा परन्तु टीमवर्क और एकजुटता से हमने कोविड रीलिफ के लिए कार्य किया। कोरोना और लॉकडाउन के प्रभाव से बदली परिस्थितियों हमने अपने कार्यक्षेत्र में बच्चों, किशोर–किशोरियों, युवाओं के साथ कई तरह अवसर बनाए ताकि उनसे जुडे विषयों पर संवाद हो,एक्शन हो और स्थितियों में बदलाव आये। लड़कियों की स्थिति पर हुए प्रतिकूल प्रभाव आंकलन के लिए राज्य व राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के साथ मिलकर अध्ययन किये, रिचर्स से निकली मांगों पर पैरवी की।

कोविड19 में हमारी टीम के सदस्यों ने वर्चुअल फोरम का इस्तेमाल करना सीखा और इसें अपने काम काम में शामिल किया, तकनीक के जरिये काम के नये तरीके खोजे और युवा लडकियों के साथ उपयोग किये।

मैं आभारी हूॅ सभी मित्र संस्थाओं–हक : सेंटर फॉर चाइल्ड राइट्स, चाइल्ड राइट्स एंड यू (CRY); चाइल्ड लाइन इंडिया फाउण्डेशन, और व्यक्तियों एनाक्षी गांगुली ठुकराल, जिन्होंने अपने अनुभव और ज्ञान के साथ अपने संदर्भ सामग्री को हमारे साथ खुले दिल से बांटा, हमारी संस्था के काम में विश्वास जताया और हमें समृद्व किया। युवा साथी रोहित जैन, जिन्होंने गांवों में घूमकर किशोर–युवा लडके लडकियों से दोस्ती बनाई और अपने स्किल शेयर किये।

हम दानदाता एजेंसी का शुक्रिया अदा करते हैं जिनके सहयोग के बिना यह सब करना संभव नही था।

मैं उन सभी गांवों और शहरी बस्ती के नागरिकों, युवा और बच्चों को खासतौर पर सेल्यूट करना चाहूंगी जिनकी वजह से हमें ऊर्जा, जोश और नई द्वष्टि लगातार मिलती रही।

साथियों, यह बदलाव का सफर अभी जारी है। बिना थके, बिना रूके अभी कई मीलों आगे जाना है।

अपने समाज में बदलाव के लिए ''मशालें लेकर चलना कि अब तक रात बाकी है'' इस सतत यात्रा के सभी सहयात्रियों को अभिवादन!!

एकजुटता के साथ,

इंदिरा पंचोली

Vision

महिला नेतृत्व के जरिए एक ऐसे समतामूलक समाज के निर्माण की प्रक्रिया में शामिल रहना जिसमें सबके लिए सामाजिक न्याय और समानता पर आधारित हो। सभी अपने नागरिक अधिकारों को प्राप्त कर पायें और अपनी व सभी की जिंदगी को बेहतर कर पायें।

Mission

सामाजिक बदलाव के लिए उपेक्षित और दलित समुदायों के महिलाओं, युवाओं और बच्चों को शिक्षित, सक्रिय और सशक्त करना, अधिकारों की प्राप्ति के सामूहिक प्रयासों को बढावा देना।

Values

- **समता और समानता :** संस्था में या संस्था के बाहर – परिवार समुदाय में धर्म, जाति, वर्ग, जेण्डर के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नही किया जाएगा।
- **पारदर्शिता**
- **नारीवादी नजरिया**
- **विविधता को स्थान/समावेशी माहौल**

Strategy

- **सामाजिक बदलाव में सामुदायिक मॉबिलाइजेशन :** संगठनात्मक गतिविधियां, समुदाय में पहुॅंच और पैठ बढाना।
- सामाजिक बदलाव के लिए नेतृत्व विकास, क्षमता और कौशल निर्माण
- शासन प्रणाली (सरकार) के साथ काम : नागरिक अधिकारों की सुनिश्चितता
- सूचनाओं और ज्ञान का संवर्धन :डॉक्युमेंटेशन, अध्ययन, प्रकाशन, प्रचार–प्रसार सामग्री का संकलन और निर्माण।
- साझेदारी, नेटवर्क,गठबंधन

MJAS workring Aria

- District reached-01
- Block – 5 [Srinagar,Kekeri,Bhinai,Sarwad, Sawar]
- Urban Salm – 8
- Villages - 150

Project Name

1- Heath & Nutrition 2- Education & Protcaion

3- Adolcent Girls Empawarment Program 4- Child Helpline 1098 Progarm

Health and nutrition project

Total Child Population

0-1 yr			1-3 Yr			3-5 Yr			6-14 Yr			15-18 Yr			Total	
Boy	Girl	Total	Boy	Girl	Total	Boy	Girl	Total	Boy	Girl	Total	Boy	Girl	Total	Boy	Girl
255	244	499	953	924	1877	333	330	663	2025	1988	4013	892	868	1760	4458	4354

Total Adult Population

Child Population -0-18 yr			Adult Population -18+			Total Population		
Boy	Girl	Total	Male	Female	Total	Male	Female	Total
4458	4354	8812	7002	6877	13879	11460	11231	22691

- **Caste wise- Household**

SC	ST	OBC	General	Minority	Total Household
1089	960	2095	0	186	4330

समुदाय जुडाव : अजमेर जिले के ब्लॉक केकडी में एससी,एसटी बाहुल्य है और श्रीनगर ब्लॉक में ओबीसी, एसबीसी समुदाय बाहुल्य है। केकडी ब्लॉक के 35 गांव और श्रीनगर ब्लॉक के 15 गांवों में सघन कार्य किया जाता है। 50 गांवों में एसटी,एससी, ओबीसी, अल्पसंख्यक परिवारों के साथ काम करते है। इसमें भी खासकर महिलाओं, बच्चों के साथ।

दोनो ब्लॉको में 4330 परिवारों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचे सुनिश्चित किया गया। 0–5 साल के बच्चों का सम्पूर्ण टीकाकरण, कुपोषित बच्चों की ग्रोथ मोनेट्रिंग, गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य जांच एएनसी, एम्बुलेन्स सेवा इसी तरह धात्री महिलाओं का प्रसव सरकारी अस्पताल में हो, जननी सुरक्षा व मातृवंदना योजना का लाभ तथा 4 पीएनसी को सुनिश्चित किया। 0–6 साल के बच्चों, गर्भवती,धात्री महिलाओं को आंगनबाडी और सबसेण्टर में नामांकित कराना, पोषाहार दिलाना प्रमुखता से किया। इसके साथ ही किशोरियों के साथ एनीमिया,आयरन, सैनेटी नेपकिन, किशोरी हिंसा, आदि मुददों पर बैठके आयोजित की गई।

प्रमुख उपलिब्धयां

0–5 साल के बच्चों के साथ प्रमुख उपलब्ध्यिां :

- 0–1 साल के बच्चों में 88.57 प्रतिशत सम्पूर्ण टीकाकरण हुआ।
- 0–5 साल के बच्चों में 72.26 प्रतिशत विटामिन की दवा पिलाई गई।
- 1–5 साल के बच्चों में 72.08 प्रतिशत एलबेन्डाजोल पिलाई गई।
- 7 माह से 3 साल और 3 साल से 6 साल के 82 प्रतिशत बच्चों को पोषाहार मिला।

कुपोषित बच्चों में ग्रेड मूवमेंट उपलब्ध्यिां :

- अतिकुपोषित से मध्यम श्रेणी में 43.61 प्रतिशत बच्चे आयें
- अतिकुपोषित से सामान्य में 12.36 प्रतिशत बच्चें आये
- मध्यम कुपोषित से सामान्य में 49.21 प्रतिशत बच्चे आये।
- 70 प्रतिशत कुपोषित बच्चों का सरकारी अस्पताल में जांच और ईलाज कराया।

- 67 निर्धन परिवारों के कुपोषित बच्चों को 3 माह हेतु दूध शुरू कराया गया। जिसमें 70 प्रतिशत बच्चों के ग्रेड मूवमेन्ट हुआ।
- 224 कुपोषित बच्चों को पोषण किट उपलब्ध कराए गए।

गर्भवती महिलाओं के साथ प्रमुख उपलब्धियां :

- गर्भवती महिलाएं 93.16 प्रतिशत आंगनबाडी में पंजीकृत है। इनमें से 92.89 प्रतिशत आंगनबाडी केन्द्रों में नामांकित है। इन्हीं को आंगनबाडी केन्द्र से पोषाहार मिला।
- गर्भवती महिलाओं में 80.96 प्रतिशत का टीटी का टीकाकरण हुआ।
- 79.26 प्रतिशत की प्रसव पूर्व की 4 जांचें पूर्ण हुई।
- 78.89 प्रतिशत महिलाओं ने आयरन टेबलेट का सेवन किया।
- गर्भवती महिलाओं को 93.16 प्रतिशत आंगनबाडी केन्द्र से पोषाहार मिला।
- 275 गर्भवती महिलाओं को पोषण किट वितरण किए गए, जिससे उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

धात्री महिलाओं के साथ प्रमुख उपलब्ध्यिां :

- धात्री महिलाओं में 76.98 प्रतिशत 4 पीएनसी पूर्ण हुई।
- 67 प्रतिशत एम्बूलेन्स सेवा का लाभ लिया।
- 72 प्रतिशत आंगनबाडी पोषाहार का लाभ लिया।

किचन गार्डन :

- 67 व्यक्तिगत किचन गार्डन अतिकुपोषित, गर्भवती, धात्री महिलाओ, किशोरियों के घर लगाए गए। जिसमें 79 प्रतिशत के एचबी में वृद्वि हुई।
- परिवारों को बाहर से हरी सब्जी खरीदनी नही पडी, पैसे और समय की बचत हुई।
- घरआंगन में शुद्व बिना दवाईयो के छिडकाव की सब्जी प्राप्त हुई।

समुदाय जागरूकता गतिविधियों में उपलब्धियां :

- **फूड डेमोस्ट्रेशन गतिविधि** में 1230 महिलाओं को लाभ मिला, उन्होने आंगनबाडी पोषाहार से विभिन्न तरीके व्यंजन बनाना सीखा और कुपोषित बच्चों, गर्भवती धात्री महिलाओं ने उसका सेवन किया स्वास्थ्य में सुधार हुआ।
- **कोरोना से बचाव, बाल विवाह रोकथाम, शिक्षा,सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण पर समुदाय जागरूकता अभियान :** 50 गांवों में 10200 समुदाय के लोगो में जागरूकता एवं प्रचार प्रसार किया गया। गांव–गांव में मोबाईल वेन के माध्यम से आईसी मटेरियल के साथ जन समुदाय के मध्य जाकर मैसेज शेयर किए गए। पोस्टर पेम्पलेट पेस्टिंग इत्यादि की गई। अभियान के दौरान जागरूकता गीत, नारे, कविताएं इत्यादि लाउडस्पीकर के माध्यम से बताई गई।
- **पपेट शो : 24** पपेट शो के माध्यम से समुदाय में जाकर स्वास्थ्य एवं पोषण, स्थानीय, फल, सब्जियां, आयरन के फायदे, मां का पहला दूध है जरूरी, जन समुदाय में व्याप्त पुरानी मान्यताओं के दुष्प्रभाव बताकर व्यवहार परिवर्तन पर फोकस करते है।
- संचार टीम द्वारा स्कूल, आंगनबाडी केन्द्र, गांव के मध्य हथाई, सार्वजनिक स्थान में समुदाय के मध्य में मुददें आधारित नाटको को दिखाया जाता है। 50 गांवों में 4 टीमें बनी हुई है, जो कि स्वास्थ्य एवं पोषण, एनीमिया, टीकाकरण के फायदे इत्यादि पर समुदाय को प्रस्तुती देते है। इससे समुदाय में जागरूकता आती है।

Best Practices

- परिवारों ने स्वास्थ्य को महत्व देने लगें है टीकाकरण दिवस पर खुद से चलकर आ रहे है और बच्चों का गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण करा रहे है।

- किचन गार्डन हेतु समुदाय के लोग पहल लेने लगे है चिहिन्त परिवारों के अलावा भी गांवों में किचन गार्डन लगाने लगें है।
- एएनएम और आशा के समय पर विजिट होने लगे है, समुदाय के लोग इस हेतु भी पहल लेने लगे है।
- मां का पहला दूध पिलाने को लेकर परिवार में व्याप्त भान्तियां दूर होने लगी है, धात्री महिलाएं बच्चे के जन्म पर एक घण्टे के अन्दर स्तनपान कराने लगी है।
- आंगनबाडी केन्द्रों पर मिलने वाले पोषाहार में देरी के लिए आवाज उठाने लगे है।
- जननी सुरक्षा योजना और मातृवंदना योजना हेतु आवश्यक दस्तावेज पूर्व में ही तैयार करके रखते है जिससे इस योजना में जुडाव में आसानी होती है।
- परिवार में साफ–सफाई, स्वच्छ पेयजल के प्रति समुदाय जागरूक हुआ है, इसके लिए समुदाय के लीडर साथी अन्य परिवारों में भी जागरूकता और प्रचार–प्रसार करने लगे है।

कोविड 19 के कारण कार्यक्रम में आए बदलाव –

- कोविड 19 के कारण समय–समय पर प्लानिंग में बदलाव, काम की रणनीति में बदलाव लाकर रिजल्ट ऑरियन्टेड काम किए गए– जैसे कोविड 19 में जन समुदाय के लिए 3 माह के लिए प्रोजेक्ट काम के अलावा परिवारों में साबुन वितरण, किशोरियों सैनेट्री नेपकिन वितरण, आशा, एएनएम,आंगनबाडी कार्यकर्ता को हेण्डवाश, सैनेटाईजर, स्कॉफ वितरण, सबसेण्टर और पीएचसी केन्द्रों पर आने वाले समुदाय के लिए हेण्डवाश, मास्क, साबुन वितरण, बच्चों के लिए ड्राईंग बुक, वर्कबुक, कलर, पेन्सिल, रबर,स्केल वितरण किए।
- ऑनलाइन जूम मिटिंग और प्रशिक्षिण आयोजित कर टीम और समुदाय का क्षमतावर्द्वन किया गया।
- जनसमुदाय के लिए पोषण किट वितरण किए गए 275 गर्भवती महिलाओं को और 240 कुपोषित बच्चों को।
- जिले स्तर पर मांग करके 280 ऐसे परिवारों की सूची दी गई जिन्हे राशन नही मिल रहा था उन्हे राशन दिलवाया गया।
- प्रोजेक्ट टीम के 3 साथियों ने जिला प्रशासन के साथ कोविड–19 महामारी के दौरान समुदाय तक पहुंच कर जनहित में कार्य किया।

शिक्षा एवं सुरक्षा परियोजना

प्रोग्राम समरी

यह कार्यक्रम केकडी और श्रीनगर ब्लॉक के 15 गांव के 3201 परिवारों के साथ किया जा जा है। जिसमें 6826 बच्चों, किशोर किशोरियों को कवर किया जा रहा है। इस कार्यक्रम को करने के निम्न उद्देश्य है –

- बच्चों, किशोर किशोरियों को सक्षम और जागरूक बनाना ताकि वे अपने अधिकारों को समझ पाएं, जानकार बने, अपने आपको सुरक्षित रखते हुए अपनी बात कह पाएं, उपलब्ध अवसरों का पूरी तरह लाभ ले पाएं तथा उनकी एजेन्सी मजबूत बने।
- 6 से 18 साल के सभी बच्चों, खासकर लड़कियों का स्कूल में नामांकन और ठहराव को सुनिश्चित करनां
- समुदाय के साथ मिलकर बच्चों के लिए सुरक्षा का माहौल बनाना और उनके विकास के लिए सभी उपलब्ध अवसरों को पूरी तरह से इस्तेमाल/लाभ दिलाने के प्रयास करना। समुदाय को सक्षम करना की वे अपने पिछडेपन से उभरकर मुख्यधारा में आए एवं संवैधानिक अधिकारों के प्रति सजग हो पाए।
- बाल विवाह के मामलों में कमी लाना।
- सुरक्षा के मुद्दों को प्रभावी रूप से उठाना और क्रियान्वयन – बच्चों की सुरक्षा के मुददें पर सरकारी तंत्र के साथ काम करना, तंत्र को मजबूत करना और जवाबदार बनाना।
- हस्तक्षेप की रणनीति कार्यक्रमों से उभरी समझ, जानकारी तथ्यों का संकलन, आंकलन, विश्लेषण करना तथा बदलाव के कारकों को पहचानना।

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गांव स्तर पर बच्चों, किशोर किशोरी, युवाओं और बडे सदस्यों के समूह बने हुए हैं। इन समूहों के सहयोग से गांव स्तर पर गतिविधियां की जा रही है

मुख्य उपलब्धियां :

- किशोरी समूह से जुडी 17 लड़कियां बोर्ड परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में उत्तीण हुई सभी के 70 प्रतिशत से अधिक अंक आये। इनमें से एक लडकी सपना गुर्जर ने जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया इसके लिए इंदिरा प्रियदर्शनी पुरस्कार के तहत एक लाख रूपये की राशि मिली है। साथ ही गार्गी पुरस्कार भी मिला।
- स्कूल से ड्रापऑउट 91 किशोर किशोरी, यंग महिलाओं को स्टेट ओपन स्कूल जुडवाया गया जिसमें 62 लड़कियां, 8 लडके तथा 21 बहुएं शामिल है।
- किशोर लड़के लड़कियों के क्षमतावर्धन के लिए 6 दिवसीय कार्यशाला –''थियेटर इन एज्यूकेशन–ड्रामा से बदलाव की ओर'' आयोजित की गई। जिसमें 50 लडके लड़कियों ने भाग लिया।
- लड़कियों को मानसिक और शारीरिक मजबूत करने तथा अपने अंदर की ताकत को पहचानने के मकसद से 15–19 वर्ष की लड़कियों के लिए दो दिवसीय आत्मरक्षा कार्यशाला –''वेनलिडो'' आयोजित की गई जिसमें 20 लड़कियों ने भाग लिया।
- बच्चो के लिए कहानी लेखन तथा बाल अधिकारों पर दो दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला ई दशम राजस्थान की तरफ से लेखिका शिप्रा माथुर द्वारा करवाई गई 25 किशोर किशोरियों ने भाग लिया। कार्यशाला में लेखन की बारीकियों को समझा। बाल विवाह, जेंण्डर, बच्चो की सुरक्षा विषयों पर चर्चा हुई तथा बच्चों ने भी अपने अपने गांव की स्थिति के बारे में बताया।
- क्राई तथा सेण्टर फॉर सोशल रिसर्च एवं फेसबुक के साझा सहयोग से 10 दिसम्बर 20 को डिजिटल सेफ्टी एण्ड ऑनलाइन वेल बिइंग कार्यशाला का आयोजन हुआ 22 बच्चों ने भाग लिया।
- :ग्राम पंचायत पर गठित बाल संरक्षण कमेटियों को बच्चों के मुद्दों पर जानकार और सक्रिय बनाने के लिए 17 दिसम्बर 20 को केकडी में ऑरिण्टेशन मीटिग की गई। मीटिग में 12 ग्राम पंचायत के

सरपंच, पंचायत समिति सदस्य, वार्ड पंच आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, ग्रामसचिव सहित 60 सहभागियों की उपस्थित रही। प्रशिक्षण में बाल सरक्षण कमेटी के सदस्यो की भूमिका, काम की जिम्मेदारी, कमेटी बच्चो के सन्दर्भ में किस किस तरह के काम कर सकती है की जानकारी दी।

- गर्ल्स नॉट ब्राइडस् अलांयस के साथ मिलकर राजस्थान की 11 संस्थाओं ने मई से जून 2020 में कोविड –19 और लॉकडाउन का लड़कियों की स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा है इसे आंकने के लिए एक अध्ययन किया। अजमेर में इस अध्ययन को महिला जन अधिकार ने ग्रामीण किशोर लड़कियों के माध्यम से किया। अंतराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर शोध में शामिल 20 लड़कियों ने 10 अक्टूबर 2020 को मीडिया के साथ प्रेस वार्ता कर अध्ययन की मुख्य फाइंडिंग्स और मांगों तथा अनुभवों को मीडिया के सामने रखा तथा केन्द्र सरकार द्वारा लड़कियों के विवाह की उम्र 18 से बढ़ाकर 21 करने के विचार पर भी लड़कियों अपना पक्ष, विचार और मांग रखी साथ ही अपने स्थानीय स्तर के स्वास्थ्य,शिक्षा, सुरक्षा से जुड़ें मुद्दों को भी मीडिया में उठाया।
- 11–29 साल के युवा–युवतियों के लिए युवा नेतृत्व एवं समुदाय विकास प्रशिक्षण 11–13 मार्च 2020 को नेहरू युवा केन्द्र अजमेर, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के माध्यम से आयोजित किया गया। जिसमें महिला जन अधिकार समिति ने सहयोगी के रूप में सहयोग देकर तीन दिवसीय प्रशिक्षण की रूपरेखा डिजाईन कर प्रशिक्षण आयोजित करवाया। कार्यशाला में संस्था कार्यक्षेत्र के 42 किकि युयु ने भाग लिया। प्रशिक्षण मैं और मेरी पहचान, नागरिक अधिकार एवं सैवेधनिक अधिकार, पंचायत स्तरीय ढ़ांचा एवं समुदाय विकास में भूमिका, स्वास्थ्य, रोजगार के अवसर व प्रशिक्षण कार्यक्रम, किचन गार्डन,ईमित्र, फोटोग्राफी पर सत्र लिये गये।
- सितम्बर 2020 में किशोरी समूह की सपना गुर्जर का चयन जनरेशन अनलिमिटेड इंडिया की यंग एक्शन टीम में चयन हुआ है। यह राष्ट्रीय स्तर की कमेटी है जिसमें देशभर के 20 युवाओं को चुना है सपना उनमें से एक है। यह कमेटी सरकार को अपने सुझाव देगी। सपना इसमें सक्रिय रूप से भागीदारी कर रही हैं।
- सरकार द्वारा लड़कियों के विवाह की उम्र 18 से बढ़ा कर 21 किये जाने के विचार पर किशोर और युवा लडकियों ने देशभर में चल रही बहस, चर्चाओं को सुना, समझा और अपने विचार रखे। लड़कियों का कहना है कि विवाह की उम्र 18 ही रखी जानी चाहिए। सरकार को विवाह से ज्यादा लड़कियों समग्र विकास के लिए कदम उटाने चाहिए शिक्षा, जीवनकौशल और आजीविका के अवसर बनाने चाहिये। युवा और किशोरों के मत को सुनने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर बनी टास्क फोर्स मे महिला जन अधिकार समिति से ममता जांगिड ने युवाओ का प्रतिनिधित्व किया।

Best Practices

- लड़कियों मिलकर अध्ययन किया, एक दूसरे के अनुभवों को साझा किया तथा मुसीबत में एक दूसरे को मदद की।
- लड़कियों ने जूम मीटिग करना, गूगल सर्वे करना, ऑनलाइन कक्षाएं, मीटिग में जुडना सीखा।
- लॉकडाउन के बाद लड़के लड़कियों के साथ थियेटर इन एज्यूकेशन, वेनलिडो प्रशिक्षण होने से उन्हें नई ऊर्जा, उत्साह,जोश मिला तथा दूसरे गांव में रहने वाले अपने दोस्तों से मिलने का मौका मिला।

कोविड 19 के कारण कार्यक्रम में आए बदलाव –

- कोविड और लॉकडाउन की स्थिति में लगभग 1100 किशोरियों तक फोन से तथा व्यक्तिगत रूप से मिलकर सम्पर्क रख उनकी परिस्थिति को समझा गया। समय समय पर उनसे बात कर समस्याओं के लिए रास्ता निकाला गया।
- किशोर और यंग लड़कियों पर ''कोविड 19 प्रभाव एवं उनकी आवाज'' को जानने के लिए अजमेर के केकडी और श्रीनगर ब्लॉक की 170 लड़कियों के साथ अध्ययन किया गया। अध्ययन में शामिल 10 लड़कियों के साथ गहनता से बात कर केस स्टडीज बनाये। अध्ययन से साफतौर पर निकला कि घरों में लड़कियों पर हिंसा बढी, लड़कियों के दोस्ती रिश्ते के ममालों में हिंसा बढी, आत्महत्या,

हत्या के मामले बढें, आवाजाही पूरी तरह पाबंद हो गई, प्राइवेसी खत्म हो गई, घरेलू काम बढ गया, तनाव, चिंता, अवसाद बढा।

- स्कूल और आंगनबाडी से मिलने वाली सुविधाओं – सेनेटरी नेपकिन, मिड डे मील को सुनिश्चित करवाया। संस्था की तरफ से 1141 किशोरियों को सेनेटरी नेपकिन दिए।
- लॉकडाउन में खाद्य सुरक्षा से 275 वनेरबल परिवारो को जुडवाया।
- कम्प्यूटर सेण्टर के जरिये 105 लड़कियों को तकनीकी शिक्षा से जोडा गया। लड़कियों ने जूम मीटिग करना, गूगल सर्वे करना, ऑनलाइन कक्षाएं, मीटिग में जुडना सीखा।
- बालयौन शोषण के 4 मामलों में हस्तक्षेप किया।
- महि‍ा हिंसा के 44 मामलों में हस्तक्षेप कर महिलाओं को सहयोग किया।
- महिला जन अधिकार समिति की तरफ से 50 किशोरियों तथा 100 अतिकुपोषित बच्चें को फूड किट दिया गया।
- 13 बच्चों को पालनहार योजना से जुडवाया गया।

<u>चुनौतियां :</u>

- कोविड के कारण स्कूलें बंद होने से बच्चों की पढ़ाई से छूट गई। स्मार्ट फोन के अभाव में ऑनलाइन शिक्षा नहीं ले पाये। जो बच्चे जुड पा रहे थे, उन्हे ऑनलाइन पढ़ाई समझ नहीं आ रही थी।
- आर्थिक तंगी से परिवारों में तनाव, डर, लडाई–झगडे का माहौल बना।
- हिंसा, सुसाइड के घटनाऐ हुई लड़कियां तनाव, अवसाद में रही, घरों में हिंसा के मामले बढ़े शादी,गोने का दबाव आने लगा।
- लडकियों पर फोन पर बातचीत करने पर पाबंदी लगाई गई।
- सेनेटरी नेपकिन की सुविधा नहीं मिल पाई।
- लाँकडाउन के कारण घर का काम भी ज्यादा बढ गया जैसे– जानवरो को चराना ,खेती घर का सारा काम, अपने लिए समय नहीं निकाल पाते थे।
- शिक्षा को लेकर किशोरियों ने बताया–पढाई बीच मे बंद हो गई ,पढाई का नुकसान हुआ घर मे रहने से जो याद था वह भी भूल गये। घर का काम इतना था कि किताबों को हाथ नहीं लगा पाये।
- स्कूल जाने से घर से बाहर निकलने का मौका भी मिलता था लेकिन स्कूल बन्द होने से पांबदियां लग गई। बातचीत की स्पेस खत्म हो गई।

कार्यक्रम फोटोग्राफ

सेल्फ डिफेन्स वर्कशॉप

थियेटर इन एजुकेशन वर्कशॉप

कम्प्यूटर टेक सेंटर : डिजिटल किशोरी बने सक्षम

❖ **प्रोग्राम समरी–**

महिला जन अधिकार समिति (MJAS) द्वारा अजमेर में हक– सेंटर फॉर चाइल्ड राइट्स व केकडी में क्राईः चाइल्ड राईटस् एण्ड यू तथा डिजिटल एम्पॉवरमेंट फांउण्डेशन के साथ मिलकर टेक सेण्टर संचालित किया। सहभागियों के साथ काम करने में मूल समझ यही रही है कि सहभागियों की जिन्दगी और विकास में शिक्षा, तकनीक, जेन्डर–भेदभाव, कानूनी जानकारी, अपने अधिकार आदि को समझना।

इस कार्यक्रम में उन्हें हर पहलू में शामिल किया गया हैं। सम्मान, समता, समानता,साझेदारी और बदलाव इस कार्यक्रम के आधारभूत मूल्य है जिनके जरिये इसका संचालन किया जा रहा है। पाठ्यक्रम के डिजाईन, सेण्टर की हर गतिविधि, वातावरण–माहौल ,रख रखाव और फेसिलिलेटर के व्यवहार तथा सभी में समानता, सहभागिता, सम्मान, साझेदारी आदि मूल्यों को इसमें संलग्न किया है। मुख्य उद्देश्यः– लड़कियों को तकनीक शिक्षा से जोड़ना और उनका आत्मविश्वास बढ़ाना। एक ऐसा वातावरण निर्माण करना जहां वे सहज व सुरक्षित महसूस कर सके। सेफ स्पेस जहां वो अपनी बात खुलकर बोल सके और उनमें लीडरशिप लेने की क्षमता का विकास हो साथ ही वें तकनीक को माध्यम बनाकर रोजगार कर पाये।

टेक सेंटर कोर्स –

- फैट (फेमिनिस्ट अप्रोच टू टैक्निोलॉजी) 6 माह कोर्सः– तकनीकी शिक्षा के साथ सामाजिक मुददों पर समझ बनाना।
- NIIT – 3 माह कोर्सः– कम्प्यूटर बेसिक से एडवांस कोर्स।
- डिजीटल लिट्रेसी–1 माह कोर्सः– बेसिक कम्प्यूटर कोर्स।
- ऑनलाइन कोर्सः– डिजीटल अवेयरनेस कोर्स, साइबर सिक्योरिटी कोर्स,।

❖ **की–हाईलाईट्स–**

✓ होम विजिट द्वारा अभिभावकों का संेटर के प्रति विश्वास बनना, संेटर विजिट कर आश्वस्त होकर अपने बच्चों को रेग्यूलर भेजना।

✓ सहभागियों का संेटर को अपनी जगह मानकर सुरक्षित महसूस करना। अपनी हर बातें शेयर कर 3 सहभागी प्रोत्साहित किया जिससे उन्होने छूटी हुई पढाई दोबारा शुरू की।

- ✓ कम्प्यूटर सीखने, सेंटर में हर गतिविधी से लगातार जुडने से सहभागियों में आत्मविश्वास बनना, अपने फैसले खुद ले पाना व कुछ सहभागी कोरो फेलोशिप में काम करना।
- ✓ लॉकडाउन में 94 सहभागियों को ऑनलाइन क्लास में जोड पाए, उनसे लगातार जुडने से वें अपनी दिक्कतों को शेयर कर मानसिक तनाव से कम कर पाये और मोबाइल तकनीकी व नई–नई एप्लीकेशन पर काम करके डिजीटल बन पाये।
- ✓ ऑनलाइन ट्रेनिंग्स् से सहभागियों का जुडाव बनना और मुददों को समझकर खुलकर अपनी बात रख पाना।
- ✓ 4 सहभागी ''गर्ल्स नॉट ब्राइड्स'' GNB द्वारा आयोजित सर्वे ''लॉकडाउन का लड़कियों पर होने वाले प्रभाव'' में रिसर्चर बनना।
- ✓ कोविड का प्रभाव थोड़ा कम होते ही सहभागियों ने कोरोना गाइडलाइन को ध्यान में रखकर व सावधानी बरतकर सेंटर आना शुरू किया, उनमें नई उर्जा का विकास हुआ। नई लडकियों के साथ भी जुडाव बनाया।
- ✓ 45 सहभागियों ने रेगुलर जुड़कर Digital Awareness व साइबर सिक्योरिटि कोर्स किया और NIIT सटीर्फिकेट प्राप्त किया।
- ✓ लॉकडाउन के बाद फैट के 6 माह कोर्स की 13 सहभागियों ने लॉकडाउन के बाद आकर अपना कोर्स कम्प्लीट किया इसके साथ ही 31 नए सहभागियों का कोर्स मे जुडाव बना।

❖ **<u>सहभागियों के कोट्स–</u>**

1. मुस्कान, संतोष (शादीशुदा), प्रीती, खुशबु, ने बताया कि– ''लॉकडाउन में जब हम अंदर ही अंदर घुट रहे थे, इस बीच में ऑनलाइन प्रक्रिया में जुड़ने से अपने अनुभव, मन की बातों को बोल पाए। बात करने हमें अच्छा लगा और सूकून महसूस हुआ''।

2.सानिया बानों लॉक्डाउन के बाद सेंटर आई तो भावुक हो गई और बोली कि– ''टेक सेंटर मेरे लिए सबसे खास जगह हैं यहां मैं अपने दोस्तों के साथ बैठकर बातें करती हूं और अपने मन की चीजें करती हूं। लॉकडाउन में मुझे सबसे ज्यादा सेंटर की याद आई क्योंकि यहां मैं खुद को सुरक्षित और समझदार महसूस करती हूं''।

3. पिंकी, मोनिका, बबीता ने बताया– ''सेंटर उनके लिए एक खास जगह बना जहॉ वे घर में पढाई नही कर पा रहे थे तो लॉकडाउन के बाद सेंटर आकर अपनी पढाई कर पाए और पढाई में आने वाली दिक्कतों को सही कर पाए''।

4..सहभागी फिजा, मंतशा, प्रीती, शारमीन, खुशबु ने बताया कि– ''सेंटर से जुडकर उन्हे नई जानकारियॉ मिल रही है जो उन्हे कहीं और नही मिलती, अपने बारे में जानने को मिला, साथ ही ऐसे टॉपिक जिन पर स्कूल/कॉलेज में बात नही उनके बारे में यहां जानने को मिला''।

❖ **<u>बेस्ट प्रेक्टिस–</u>**

- ✓ तकनीक का नया माध्यम सीखना– ऑनलाइन मींटिग्स करना व प्रजेंटेशन करना, घर बैठे ऑनलाइन काम करना, गूगल फॉर्म बनाकर सर्वे करना।
- ✓ सहभागियों के साथ ऑनलाइन क्लास, वाट्सअप ग्रुप बनाकर चर्चा, कॉफ्रेंस कॉल द्वारा लॉकडाउन में भी सभी लड़कियों के साथ जुड़ाव बना रहना।
- ✓ टेक्नोलॉजी का उपयोग नये–नये तरीको से करना और लगातार नये नये माध्यम खोजकर उनको उपयोग में लाना– स्कैनर, केनवा में पोस्टर डिजाइन करना, फोन में माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस का इस्तेमाल कर डॉक्यूमेंट तैयार करना, गूगल ट्रांसलेटर व गूगल इनपुट टूल्स का इस्तेमाल करना।
- ✓ ऑनलाइन अलग अलग कोर्स कर पाना– फोटोशॉप, सोशल मिडिया अवेयरनेस।
- ✓ सेंटर की 2 सहभागियों का सेंटर में होने वाली गतिविधियों से आत्मविश्वास बना और वें लॉकडाउन के दौरान अपने साथ होने वाली छेडछाड व मारपीट के खिलाफ सेंटर में बता कर और फेसिलिटटर व अन्य लोगों के सहयोग से अपनी आवाज उठा पाई और आरोपी के खिलाफ कंप्लेंट कर पाई।

- ✓ अपने स्किलस् को पहचान कर उस पर काम कर पाना और नई चीजें सीखकर रोजगार की तरफ बढना– सहभागियों ने अपने मेंहदी, सिलाई, ब्यूटी पार्लर, कम्प्यूटर नॉलेज आदि स्किल को बढाकर उससे रोजगार की दिशा में आगे बढ पाए।
- ✓ सहभागियों का सेंटर आकर अपनी पढाई करना व ऑनलाइन पढाई कर ग्रुप डिसकस कर और सहभागियों को जानकार करना।
- ✓ सहभागियों का ऑनलाइन स्कूल/कॉलेज/कोचिंग की पढाई कर पाना।
- ✓ ऑनलाइन मीटिंग्स के माध्यम से विभिन्न वर्कशॉप, वेबीनार, ट्रेनिंग, क्लास व चर्चाओं में जुड़ पाना व मुददों– दोस्ती–रिश्तों, माहवारी, प्रजनन स्वास्थ्य, अंधविश्वास आदि मुददों पर अपनी बातों को रख कर नई जानकारियॉ प्राप्त कर पाना।
- ✓ 4 लडकियों ने नेशनल प्लेटफॉर्म पर होने वाली मीटिंग्स में लडकियों के मुददों – लडकियों की शादी की उम्र बढाने के दुष्प्रभाव, लडकियों का लॉकडाउन के कारण उनकी स्थिति पर पडने वाले प्रभाव, ऑनलाइन पढाई ना हो पाना आदि मुददों पर अपनी बात रखी।
- ✓ 4 लडकियों की लॉकडाउन में उनके उपर पडने वाले प्रभाव को लेकर उनकी केस स्टडी बनी।
- ✓ 8 ऐसे ट्रेनर तैयार हो पाए जो ऑनलाइन क्लास सहभागियों के साथ कनडक्ट कर सकते है।
- ✓ दोस्ती–रिश्तें में कई प्रकार के मुददों– जेंडर, मर्दानगी, पितृसत्ता, सहमित, जोखिम आदि मुददों को जोडते हुए दोस्ती–रिश्ते की ट्रेनिंग लेकर 6 मास्टर ट्रेनर तैयार हुए जो आगे रिसोर्स पर्सन की तरह दोस्ती–रिश्ते पर ट्रेनिंग दे सकते है।

❖ **<u>यूनिक चैलेंजेंस्–</u>**

- कोरोना वायरस के चलते लॉकडाउन होने के कारण सेंटर बंद करना।
- ऑनलाइन क्लास में सहभागियों को जोडा तो पर जिनके पास खुद का मोबाइल नही था, वो अपने भाई/पिता के मोबाइल से क्लास में जुड़ते, यदि वे काम पर चले जाते या कही बाहर चले जाते तो इस स्थिति में सहभागी रेग्यूलर क्लास में नही जुड़ पाते थे इस कारण देर शाम को क्लास करना पडा ताकि वे लोग सेशन में जुड पाए।
- लॉकडाउन के बाद भी कोरोना पॉजिटीव की बढती संख्या से स्थिति खराब होती जा रही थी ऐसे महौल को देखते हुए कभी–कभी सेंटर बंद करना पड़ता था।
- ऑनलाइन क्लासेस में कई चर्चाए हुई लेकिन सहभागियों ने बताया कि उन्हें इस तरह के क्लास में रूचि कम आती हैं और समझने में भी थोडी दिक्कत होती हैं।
- ज्यादातर सहभागियों को जूम एप का इस्तेमाल करने में दिक्कत हुई क्योंकि वें नेट प्रोब्लम के कारण बार–बार क्लास से छूट जाते थे और फिर से कनेक्ट होते थे इस प्रक्रिया में चर्चा थोडी अधूरी रह जाती थी और समझ भी कम बन पाती थी।
- इस वर्ष कोविड के चलते सहभागियों के घरों में विजिट, मोबिलाइजेशन नही हो पाया जिससे ज्यादा लडकियों तक पहुॅच नही बन पाई।

❖ **<u>कोविड के कारण किए जाने वाले नए प्रोग्राम</u>**

कोविड–19 के कारण देश में लॉकडाउन से सभी शिक्षण संस्थान बंद हो गए और ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को अपनाया गया, टेक सेंटर में भी ऑनलाइन क्लासेस स्टार्ट की गई और सेंटर को एक डिजीटल रूप, टैक्नोलॉजी क्षेत्र में सेंटर व ट्रेनीज को एक नई दिशा मिली है।

- ऑनलाइन क्लासेस के सेशन का प्लान बनाया गया।
- ऑनलाइन क्लासेस लेने के लिए NIIT ट्रेनर द्वारा ऑनलाइन मीटिंग एप का प्रोसेस व काम करने का तरीका समझा जिससे सहभागियों के साथ क्लासेस प्लान कर पाए।

- सेंटर से जुडे सभी नए व पुराने सहभागियों की सूची बनाई गई जिसमें सहभागियों के नाम, कॉन्टेक्ट नम्बर व मोबाइल फोन स्पेसिफिकेशन– पर्सनल/पेरेंटस का फोन/की–पैड फोन आदि बनाया।
- जिन सहभागियों के पास स्मार्ट फोन है उनके साथ सैशन लेने का प्लान बनाया और ग्रुप तैयार किए ताकि एक ऐसा ग्रुप ट्रेंड हो पाए जो अन्य सहभागियों को तैयार कर पाए। सहभागियों से बात करके क्लासेस का टाइम सेट किया। सहभागियों को मीटिंग एप डाउनलोड करवाया व मीटिंग में जुडना बताया गया।
- सभी का व्हाट्सप ग्रुप भी बनाया जिसमें वें सभी एक दूसरे से जुड़े, चर्चा कर पाए और क्लासेस की जानकारी भी प्राप्त कर पाए।
- ऑनलाइन क्लासेस कोर्स– मोबाइल लिट्रेसी, डिजीटल अवेयरनेस, साइबर सिक्योरिटि, इंग्लिश लर्निंग क्लास।

लडकियों की आजादी एकजुटता और सशक्तिकरण के लिए फुटबॉल कार्यक्रम –

कार्यक्रम के बारें में –

महिला जन अधिकार समिति और हक सेण्टर फॉर चाइल्ड राइटस के संयुक्त तत्वाधान में अजमेर जिले के ग्रामीण और अवसर विहीन किशोरियों और नवयुवतियों के लिए फुटबॉल कार्यक्रम 2016 में शुरू किया गया। इस कार्यक्रम में खेल के जरिए किशोरियों और नवयुवतियों की अवसरों तक पहूंच बढाने, उनकी आवाजाही बढाने, शिक्षा से जुडाव बनाने साथ ही उन्हें खुद को प्रस्तुत करने का मौका भी मिल सकेगा और खास बात है कि बाल विवाह में कमी आएगी। और इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था में अपनी बात रख पाएगी। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान रखते हुए इस खेल कार्यक्रम में खेल के साथ साथ जीवन कौशल, जेझडर और अधिकार, कानूनी और संवैधानिक अधिकार, कम्युनिकेशन स्किल और आत्मरक्षा आदि प्रशिक्षण शामिल किए गए।

यह फुटबॉल कार्यक्रम पहले अजमेर जिले के चार गांवों हासियावास, चाचियावास, मीणों कानया गांव और सांकरिया में चलता था। इसी साल में अन्य दो गावों तेडवों की ढाणी और पदमपुरा में खेल शुरू किया गया। अभी कुल 236 लडकियां नियमित मैदान पर खेल का अभ्यास करती है।

कार्यक्रम का उद्देश्य –

- जेण्डर और पितृसत्ता के कडे नियमों से बने दायरों को तोडना।
- खेल मे लडकियों की भागीदारी बढाना।
- लडकियों की घरेलू भूमिकाओं को तोडना।
- टीम भावना को पनपाना और नेतृत्व क्षमता को बढावा देना।
- लडकियों की एकजुटता और उन्हे संघटित बनाने पर जोर देना ताकि वो समस्याओं से लड कर अपने लिए नए रास्ते बना सके।

मुख्य उपलब्धियां –

- राजस्थान सरकार द्वारा जनवरी 2020 में स्टेट गेम्स का आयोजन किया गया। जिसमें राज्य के 18 जिलों का गर्ल्स फुटबॉल टीमों ने भाग लिया। जिसमें मजअस की टीम का बहुत अच्छा प्रर्दशन रहा और चौथा स्थान मिला।
- वेस्टर्न रेल्वे द्वारा आयोजित फुटबॉल टूर्नामेंट में मजअस की टीम ने टुर्नामेंट जीता।
- फुटबाल में नए जुडाव – हासियावास में 30 नई लडकियां, चाचियावास में 11, और सांकरियां में 15,तेडवों की ढाणी में 32 और पदमपुरा में 30 नई लडकियां फुटबाल खेलने लगी है। कुल 118 नई लडकियां जुडी है।
- तेडवों की ढाणी और पदमपुरा में फुटबॉल खेल का विस्तार हुआ है। 62 लडकियां रोज मैदान पर खेल रही है।
- फुटबॉल टीम की कॅप्टन सपना गुर्जर का युनिसेफ की युवाह कमिटी में सलेक्शन हुआ है। इसमे देशभर से 600 लडकियों में से वो चयनित हुई है। यह कमिटी युवाओं के मुद्दों पर सरकार को एडवाइज करेगी।
- फुटबॉल खिलाडी लडकियों की स्टोरीज को अलग अलग राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय मीडिया से कवरेज किया गया। जैसे दिल्ली की संस्था प्रो स्पोर्टस डवलपमेंट में दो खिलाडी लडकियों की स्टोरी छपना, अलजजीरा, हॉग कॉग बेस्ड न्यूज पेपर साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट, इ–पेपर द मोरूंग एक्सप्रेस, और दैनिक भास्कर आदि

खिलाडियों के उदबोधन –

फुटबॉल खिलाडी लडकियों को खेल ने एक नजरिया दिया है, आवाज दी है। चार साल खेलने के बाद वो अपने से जुडे निर्णय लेने लगी है। जैसे शादी से संबधित घर में बात करने लगी हैं। हासियावास की सुमन कहती है, " **जिंदगी तो जैसे एक खाने की थाली है और शादी एक चावल का दाना है।**" इसीतरह ममता की शादी भी उसकी 3 मामा की बेटियों के साथ करने की घरमें बात चली। उसपर शादी का काफी दबाव आया तो उसने अपने परिवार में कहा, "**मेरी शादी करोगे तो पुलिस को शिकायत कर दुंगी, मेरे साथ साथ बाकी सबकी भी शादी नही होने दूंगी** "।

पूजा ने एक इंटरव्यू में कहा, " **आजादी क्या है यह जब घर से पहली बार आवासीय कॅम्प में आए, तब महसूस किया।**

हासियावास की धोनिया हरिजन का कहना है, " **यह खेल नहीं होता तो, मेरी शादी कब की हो जाती।**"

बेस्ट प्रक्टिस –

लॉकडाउन में लडकियों को प्रो स्पोर्टस डवलपमेंट द्वारा आ रहे एक्सरसाइज के वीडियो भेजे गए। उन्हे लडकियों ने अपने अपने गांव में छोटे छोटे समुह बनाकर करना शुरू किया।

इस साल में लडकियों को जूते वितरण किए गए। लडकियांने अपने जूते लीडर लडकियों के पास जमा करवा दिए। वो रोज मैदान पर आकर ही जूते पहनती है ताकि जूते जल्द खराब न हो।

हासियावास और चाचियावास की खिलाडी लीडर लडकियों ने अपनी टीम्स को लॉकडाउन के बाद जब से खेलने लगे तब से पुनः जोडना, मैदान की सफाई करना, साथ ही टीम में समन्वय बिठाना शुरू

किया। साथ ही खुद लडकियां अपनी जिम्मेदारी का बंटवारा कर अन्य लडकियों को खेल, एक्सरसाइज करवाना शुरू किया। लडकियों ने सुबह ग्रुप बनाकर नियमित रंनिग करना, सुबह चना मुंग और मुंगफली को भिगोकर खाना शुरू किया है ताकि उनमें स्ट्रेंथ आए।

श्रीनगर ब्लॉक के तेडवों की ढाणी में में फुटबॉल खेल का विस्तार करने के लिए हासियावास की लडकियों ने जिम्मेदारी ली कि वो उन नई लडकियों को कोचिंग देंगी। वो अपनी कोचिंग के साथ साथ सप्ताह में दो दिन दो लडकियां तेडवों का ढाणी में जाकर कोचिंग देने लगी हैं।

गांव हासियावास में टयूशन के कारण कुछ लडकियां खेल में अनियमित होने लगी तो सीनियर लडकियों ने पढाई में उन्हे मदद करने की बात कही। तो गांव की ही नेराज गुर्जर ने चार हरिजन लडकियों को अपने घर बुलाकर पढाना शुरू किया।

चुनौतियां –

इस साल में मुख्य चुनौति लॉकडाउन के कारण रही। लॉकडाउन के दौरान लडकियां मैदान पर जाकर खेल नही पाई। इस कारण नियमित प्रक्टीस से छूट गई। उसके बाद जब पुनः खेलना शुरू किया तो उन्हे काफी दिक्कत हुई।

लॉकडाउन के कारण कॅम्प का आयोजन नही कर पाए। आवासीय कॅम्प में लडकियों के लिए खेल की बारिकियोंको सीखने के साथ साथ एक खुला माहौल भी मिलता हैं। उसका सीधा असर लडकियों की जिदंगियों पर पडता है। क्योंकि कॅम्प के बाद उनकी उर्जा, आत्मविश्वास टीम भावना और आपसी रिश्ते काफी मजबूत हाते है।

लॉकडाउन के कारण अण्डर 17 का जो 2021 में फुटबॉल वर्ल्ड कप होने वाला था पर वो हुआ नही। उसमें मजअस टीम की चार खिलाडी लडकियों को ट्रायल देने जाना था। वो ट्रायल देने जाती या किसी का चयन हो जाता तो टीम को एक मोटिवेशन मिलता साथ ही लडकियों के खेल के प्रति एक माहौल बन जाता।

केकडी में लडकियों का अनियमित खेलना। इसलिए खेल में भी लडकियां पिछड जाती है। साथ ही वहां फुटबॉल कोच का मिल नही पाना यह भी बडी चुनौति है।

लॉकडाउन और लडकियों के अनेकों दबावों के बावजूद 236 लडकियां फुटबॉल खेल से जुडी हुई है। खेल के नियमित ठहराव के लिए आवश्यकतानुसार रिसोर्सेस की कमी है।

कोविड 19 के कारण कार्यक्रम में आए बदलाव –

कोविड के कारण मार्च महिने से सितम्बर तक लडकियों का मैदान पर फुटबॉल खेलना छूट गया था। खेल वापस शुरू करने के लिए 6–7 लडकियां मिलकर किसी के घर जाकर एक्सरसाइज करने लगी। इससे लड़कियों का जुडाव होने लगा। लड़कियों ने अपना रूटीन सेट किया, सुबह उठकर दौडना, प्रेक्टिस करना और सितम्बर माह से नियमित खेलना शुरू किया।

लडकियों से फोन व व्हॉटसअप ग्रुप बनाकर सम्पर्क में रहे। कोविड एवं लॉकडाउन के कारण जो प्रभाव पड रहे थे उनके बारे में जाना, जानकारियां बांटी।

फुटबॉल के आवासीय कॅम्प नही कर पाए उसके स्थान पर गांव में ही प्रैक्टिस करवाई गई।

चाइल्ड लाइन 1098 निशुल्क फोन सेवा

प्रस्तावना :

महिला जन अधिकार समिति द्वारा परियोजना में जनवरी 2020 से मार्च 2021 तक केकडी,सरवाड,सावर और भिनाय पंचायत समिति के ग्रामीण क्षेत्रो में बच्चों के मुद्दों पर जागरूकता व सक्रियता लाने का प्रयास किया गया। देखरेख और संरक्षण की जरूरत वाले बच्चों के लिए यह 24 घंटे निःशुल्क आपातकालीन फोन सेवा है, जो कठिनाइयों से घिरे, पीडित, उपेक्षित, लावारिस, प्रताडित, मिसिंग बच्चे तक पहुँचकर उसे आपातकालीन राहत देकर आगामी पुनर्वास के लिए सम्बन्धित सेवाओं से जोडती है।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के आर्थिक संसाधनों व चाइल्ड लाइन इण्डिया फाउण्डेशन, मुम्बई के मार्गदर्शन में महिला जन अधिकार समिति के सहयोग से संचालित की जा रही है। महिला जन अधिकार समिति अजमेर में चाइल्डलाइन की सहायक संस्था है जो अजमेर जिले के चार ब्लॉक – केकडी,सरवाड,सावर और भिनाय में जुलाई 2011 से काम कर रही है। इस वर्ष में मुख्य प्रयास रहा कि समुदाय में बच्चों के मुद्दों पर समझ बने तथा उन्हें गम्भीरता और प्राथमिकता से लेने की प्रक्रिया शुरू हो। बाल शोषण, यौन हिंसा के मामलों पर हस्तक्षेप तथा पुर्नवास के लिए कदम उठाये गये। साथ ही बच्चों के लिए राज्य की जिम्मेदार ईकाईयों – बाल कल्याण समिति, किशोर न्याय बोर्ड, महिला व बाल विकास विभाग, राज्य बाल संरक्षण आयोग, विशेष बाल पुलिस यूनिट के साथ गठबंधन कर बच्चों के मुद्दें कार्यवाही के लिए उठाये गये।

चाइल्ड लाइन के उद्देश्य

- तकनीकी द्वारा अन्तिम लक्ष्य तक पहुंचना।
- सक्रिय पैरवी के द्वारा व्यवस्था को उत्प्रेरित करना।

- एक बाल मैत्री पूर्ण सामाजिक वातावरण तैयार करने के लिए बच्चों, राज्य, समाज, समुदाय व उद्योग जगत के बीच तालमेल बनाना।
- प्रत्येक के लिए बाल संरक्षण को प्राथमिकता में लाने के लिए प्रचार–प्रसार करना।

इस वर्ष में हस्तक्षेप किये मामलों की संख्या

Case Category	Case Number
Medical Help	6
Parents asking help	1
Shelter	14
protection from Abuse	**Child marriage – 7** **Child sexual abuse – 6** **Abuse – 8** **Child Labour -2** **Total - 23**
Emotional support & guidance	17
Restoration	4
Other interventions	7
Did not find	3
Did Not Interventions	12
Sponsorship	29
Corona Need Food	6
Total	122

कोविड–19 और राहत कार्य

कोविड–19 और राहत कार्य

कोविड–19 कोरोना वैश्विक महामारी के संकट तथा लॉकडाउन के दौर मे महिला जन अधिकार समिति से 3 सदस्यों ने अप्रैल से जून 2020 तक जिला रसद विभाग में वॉलिंटियर किया। इसके अलावा संस्था की तरफ से वंचित, गरीब, मजदूर वर्ग को तत्काल राहत पहुंचाने के लिए काम किया। राहत पहुंचाने के निम्न काम हाथ में लिए –

- जरूरतमंद परिवारों, व्यक्तियों को खाद्य सामग्री किट (सूखी राशन सामग्री) का वितरण करना
- परिवारों, सेवाप्रदाओं (आंगनबाडी, उपस्वास्थ्य एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र कार्मिक) को पर्सनल प्रोटेक्शन एक्युपमेंट वितरित करना
- किशोर लड़कियों को सेनेटरी नेपकिन उपलब्ध करवाना
- बच्चों को खेल, मनोरंजन सामग्री (इंडोर गेम) वितरण
- समुदाय तक जानकारी पहुंचाना तथा सेवाओं का लाभ दिलवाने के लिए फेसीलिटेट करना
- प्रवासी मजदूरों को उनके राज्य तक पहूंचाने के लिए पैरवी करना

उपलब्धियां

- लॉकडाउन के दौरान समिति के 20 स्वयंसेवकों ने जिला रसद विभाग के साथ मिलकर 85214 फूड पैकिट का वितरण किया है।
- 945 प्रवासी मजदूरों को स्थानीय प्रशासन के साथ पैरवी कर रेल व बस द्वारा मधुबनी बिहार,पन्ना (मध्य प्रदेश), मालदा, पश्चिम बंगाल कटिहार, बिहार भेजने की व्यवस्था की तथा रास्ते के लिए अल्पाहार किट वितरित किये।

जरूरतमंद परिवारों में ब्रटी गई खाद्य सामग्री

अजमेर के ग्रामीण इलाकों तथा शहरी कच्ची बस्तियों में 502 राषन किट का वितरण किया गया जिससे 1982 व्यक्ति लाभान्वित हुए।

क्रम संख्या	श्रेणी	परिवार संख्या जिन्हें खाद्य सामग्री दी गई	परिवार में व्यक्तियों की संख्या
1.	एकल, निर्धन, भूमिहीन महिला	137	454
2.	हिंसा पीड़ित लड़कियां महिलाएं	3	14
3.	कुपोषित बच्चे, निर्धन, भूमिहीन परिवार	100	436
4.	गरीब गर्भवती महिला	05	22
5.	दुर्धटना से पीडित	06	28
6.	विधवा महिला	37	119
7.	निर्धन, भूमिहीन परिवार	171	758
8.	शारीरिक मानसिक विकलांग	19	81
9.	बुजुर्ग, अशक्त	5	13
10.	अनाथ बच्चे	05	10
11.	बीमारी वाले परिवार	04	20
12.	बुजुर्ग दम्पति	10	27
	कुल	502	1982

समुदाय, सेवाप्रदाओं, किशोरियों, बच्चों को बांटी गई सामग्री

Sl.	Items	Unit	Quantity Distributed	Brief Remarks
a.	Soaps	12 Pic	57972	Soap Distributed House holder and PHC & SHC
b.	Sanitary pads	3 packets	6258	Pads Distributed Adolescents girls and Lactating Women
c.	Hand wash		2367	Hand Wash Distributed AAA Worker and PHC & SHC
d.	Hand Wash Pouch		2091	Hand Wash Distributed AAA Worker and PHC & SHC
e.	Sanitizer		358	Sanitizer Distributed AAA
f.	Mask	100 Pic	4400	Mark Distributed PHC & SHC and DLC Centre &

				Ajmer Kekri Office
g.	Scarf	02	208	Scarf Distributed AAA Worker
h.	Play Material Saapsidhi & Loodo	01 Pic	4464	Play Material Distributed Children
i.	Play Material (Wax Colour)	02 pic	8927	Play Material Distributed Children
j.	Play Material (Drawing Book)	01	4464	Play Material Distributed Children
k.	Pouch (Pencil, Rubber, Shaper, Scal @1pc)	01	4464	Play Material Distributed Children
l.	Register (10th Class)	05	1346	Register Distributed Adolescents Girls

Reports & Publications

Reports

1- COVID -19 Response

Impact on Girls – Making Their Voices Heard : Study in Rajasthan

Study Facilitation by Girls Not Brides Rajasthan Alliance. Mjas is study partner

2- Understanding Impact Of COVID -19 : Informal Sector

How to impacted from Lockdown & Governments Decisions : Assessment Report

3- **COVID -19 Response & Lockdown : Volunteer Driven Information Dissemination Responses Report**

4- **COVID -19 Phase 1 &2 Response Report**

<u>Publications</u>

1- Aamli : Children Magazine

2- Poster on Anaemia, Malnutrition, Nutrition, Child Marriage, Covid 19 Awareness

अवार्ड / सम्मान

जिला रसद अधिकारी अजमेर द्वारा संस्था टीम के तीन कार्यकर्त्ताओं को कोविड रिलीफ हेतु कार्य करने के लिए सम्मानित किया गया।

अजमेर जिला प्रशासन द्वारा वैश्विक संकट के समय में जरूरतमंद लोगो की सहायता हेतु संस्था के तीन कार्यकर्ता **सिल्वेस्टर एरियल, छोटू सिंह रावत, राजेश मेघवंशी** को प्रशस्ति पत्र दिया गया। प्रथम लॉकडाउन के तीसरे दिन से जिला कलेक्टर कार्यालय में प्रतिदिन 10 से 7 बजे तक गरीब वंचित तबके, प्रवासी मजदूरों, कर्फ्यूग्रस्त एरिया में होम क्योरंनटाईन सेण्टर, तक भोजन पैकेट सूखी खाद्य सामग्री घर–घर पहुंचाने, के लिए कार्य किया। प्रवासी मजदूरो की घर वापसी के लिए जिला प्रशासन के साथ पैरवी की गई। इसके अलावा जिला प्रशासन के आफिस में कम्प्यूटर वर्क में सहयोग दिया। इस कार्य के लिए तीनों सदस्यों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।